वर्णाश्रम धर्म (1)

Q. धर्म क्या है? साधारण धर्म एवं वर्णाश्रम धर्म -

Ans. धर्म शब्द का कई अर्थों में प्रयोग होता है। इसके अर्थ जाते हैं विषय, न्याय, शील, कर्तव्य, कर्म इत्यादि हैं। धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है। धृ का अर्थ है धारण करना। अतः जो धारण करने योग्य है वही धर्म है। जहाँ आचरण का प्रसंग है वहाँ ऐसे कर्म जो वेद श्रुति इत्यादि शास्त्रों के अनुकूल हों, उन्हें ही धर्म कहा जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो धर्मशास्त्रों में न मिले वह अधर्म है। जो इन शास्त्रों में निषिद्ध है, वही अधर्म है। धर्मशास्त्रों में मनुष्य के हर प्रकार के कर्तव्यों का, आचार, व्यवहार, प्रायश्चित तथा अशौच-संबंधी उल्लेख भी मिलता है। माता-पिता परिवार समाज, राज्य तथा अन्य लोगों के प्रति कैसा आचरण होना चाहिए? ये सभी बातें यहाँ धर्मशास्त्र से प्राप्त होता।

धर्मों का वर्गीकरण :—

मनु के अनुसार धर्म दो प्रकार के हैं — (i) वर्णाश्रम धर्म (ii) साधारण धर्म।

(1) वर्णाश्रम धर्म :— भारतीय नैतिक विचार के अन्तर्गत धर्म का एक महत्वपूर्ण विभाजन उसके वर्णाश्रम धर्म के सिद्धांत के अनुसार किया गया है। यहाँ धर्म का अर्थ कर्तव्य ही है। अतः वर्णाश्रम धर्म का अर्थ है - वर्ण तथा आश्रम के अनुकूल कर्तव्य। यहाँ वर्ण का अर्थ वर्ग है तथा आश्रम का अर्थ मानव जीवन की प्रवर्तिक अवस्था है। वर्ण चार हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। वर्ण का व्यवहार जाति के लिए हुआ। आज भी इसका अर्थ जाति ही है।

Scanned with CamScanner

प्रारम्भिक अवस्था में वर्ग का व्यवहार अल्प अर्थ में होता था। सामाजिक गठन के उपरान्त समाज का सुसंचालन आवश्यक था। इसके सुसंचालन हेतु कार्यों के विभाजन को आवश्यक समझा गया। सारे कार्यों का निष्पादन एक ही व्यक्ति के द्वारा सम्भव नहीं था। अतः प्रकृति एवं प्रवृत्ति पर ध्यान रखकर कार्यों का उचित विभाजन किया गया। कुछ को विद्या अध्ययन एवं अध्यापन का कार्य सौंपा गया। कुछ को व्यापार एवं कृषि-कार्य सौंपा गया, तथा कुछ को श्रम एवं सेवा कार्य सौंपा गया। इसी विभाजन के आधार पर क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र हुए। यह वर्ण-व्यवस्था मनोवैज्ञानिक आधार पर अवलम्बित थी। भारत के पतन के बाद इस वर्ण-व्यवस्था का भी पतन हो गया। ऊँच-नीच के भाव का प्रवेश हुआ। ब्राह्मणों में अहंकारपूर्ण उच्चता की भावना आ गई और शूद्रों में हीन भावना का समावेश हुआ।

मनु के द्वारा उपरोक्त चारों वर्णों के धर्म इस प्रकार निश्चित हुए।

(1) ब्राह्मणों के धर्म :- अध्ययन अध्यापन यज्ञ करना तथा यज्ञ कराना, दान लेना तथा दान देना।

(२) क्षत्रिय के धर्म :- शूर-वीरता, युद्ध-प्रियता, शक्ति, ब्राह्मणों को दान देना, देश की रक्षा करना, शासन-संचालन, प्रजा का पालन-कार्य।

(3) वैश्य के धर्म :- व्यापार एवं खेती करना, गायों की सेवा करना, तथा दान देना।

(४) शूद्र के धर्म :- सभी वर्णों की सेवा करना।

मनुष्य में चार प्रकार की प्रवृत्तियाँ हैं सात्विक, सात्विक-राजसिक, राजसिक-तामसिक, एवं तामसिक। ब्राह्मणों में सात्विक प्रवृत्ति की प्रधानता रहती है, क्षत्रिय में सात्विक एवं राजसिक दोनों प्रवृत्तियों की प्रधानता रहती है।

Scanned with CamScanner

तथा शूद्रों में तामसिक प्रकृति की प्रधानता रहती है। अथर्ववेद में भी कहा गया है - "न दासो नार्यो महिला मुंत सिमाय।" अर्थात् मैं किसी को जन्म से दास या आर्य नहीं समझता, मैं उनका मूल्यांकन उनके गुणों से करता हूँ।"

वर्णव्यवस्था से शक्ति का विकेन्द्रीकरण हुआ है। ज्ञान की शक्ति ब्राह्मणों को दी गई है। शासन की शक्ति क्षत्रियों को दी गई है। व्यापार करने एवं खेती करने की शक्ति वैश्यों को दी गई है। और सेवा की शक्ति शूद्रों को दी गई है। समाज निरंकुश न हो इसलिए उसकी समस्त शक्तियों को इस प्रकार विभिन्न वर्णों में विभाजन कर दिया गया है।

वर्णव्यवस्था काफी उपयोगी सिद्ध हुई है। इससे समाज में स्थिरता, सुदृढ़ता और संतुलन आया है। ~~वर्णव्यवस्था के कारण शक्ति का [illegible] नहीं हो पाता है।~~

आश्रम व्यवस्था

वर्ण व्यवस्था के आधार पर ही व्यक्तिगत जीवन का विभाजन चार आश्रमों में हुआ है। आश्रम का शाब्दिक अर्थ है जीवन यात्रा का विश्राम स्थल। हिन्दू नीतिशास्त्र यह कहता है कि मनुष्य का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। लक्ष्य की ओर लम्बी यात्रा में आश्रम ~~एक~~ सहायक है। यथार्थ में आश्रम चार खण्डों वाली एक सीढ़ी के रूप में प्रदर्शित किया गया है। यह सीढ़ी ही ब्रह्म की ओर आत्मा को ले जाती है।

आश्रम भी चार के हैं। ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम।

ब्रह्मचर्य आश्रम :- इस आश्रम में ज्ञान संचय एवं अध्ययन की प्रधानता है। ~~आश्रम~~ गुरु इस आश्रम का प्रधान होता है। इस आश्रम में केवल शास्त्रों का ही अध्ययन नहीं किया जाता, वरन् ~~शास्त्र~~ शस्त्र चलाने की भी शिक्षा दी जाती है। इस आश्रम में यथार्थ चिन्तन, भिक्षाटन, तथा गुरु की सेवा ही ~~वैयक्तिक~~ प्रधान था।

(5)

(2) गृहस्थाश्रम :— यह आश्रम ब्रह्मचर्य के बाद आता है। ब्रह्मचर्य आश्रम के बाद मनुष्य इस आश्रम में प्रवेश करता है। इस आश्रम में मनुष्य का विवाह होता है फिर मनुष्य सन्तानोत्पत्ति करता है और परिवार एवं समाज का दायित्व भार ग्रहण करता है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के बाद मनुष्य यज्ञ आदि करता है। इस आश्रम में मनुष्य को देव-यज्ञ, ऋषि-यज्ञ पितृ-यज्ञ मित्र-यज्ञ एवं भूत यज्ञ आदि करना चाहिए।

" मनु ने जीवन व्यवस्था के लिए गृहस्थाश्रम को महत्वपूर्ण बताया है। इसी आश्रम के द्वारा अन्य आश्रम का भरण पोषण होता है।

(3) वानप्रस्थाश्रम :— " गृहस्थाश्रम के बाद मनुष्य को वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए। मनु के अनुसार " जब गृहस्थ अपना बाल सफेद देखे और उसके लड़के को लड़का हो जाए तो वह लड़के को सब कार्य सौंपकर योगाभ्यास तथा भगवान के भजन के लिए जंगल चला जाए। " इस प्रकार जंगल में एकान्त जीवन व्यतीत करना ही वानप्रस्थाश्रम है। मनुष्य को सांसारिक जीवन का परित्याग कर पारलौकिक जीवन व्यतीत करने में तल्लीन होना चाहिए। इस आश्रम में यज्ञ, तप, सत्य, स्वाध्याय, दानशीलता, अपरिग्रह, प्रेम, और दयाभाव कर्तव्य के रूप में दर्शाये जाते हैं।

(4) सन्यासाश्रम :— यह मनुष्य के जीवन की अंतिम विश्रामावस्था है। वानप्रस्थाश्रम के बाद यह आश्रम आता है। वानप्रस्थाश्रम इसकी पूर्व अवस्था है। इस अवस्था में मनुष्य पूर्ण त्यागमय स्वरूप ग्रहण कर लेता है। मनुष्य की सारी वासनाएँ नष्ट हो जाती हैं। मनुष्य पूर्णतः ईश्वर में लीन हो जाता है। मोक्ष प्राप्त करना ही इस आश्रम का कर्तव्य है।

Scanned with CamScanner